भारत में दहेज प्रथा

यह एडटिोरयिल दनिांक 02/07/2021 को द इंडयिन एक्सप्रेस में प्रकाशति लेख “Breaking the chain” पर आधारति है। यह भारत में दहेज से उत्पन्न होने वाली समस्याओं से संबंधति है।

दहेज एक सामाजकि बुराई है जसिके कारण समाज में महलिाओं के प्रतअिकल्पनीय यातनाएँ और अपराध उत्पन्न हुए हैं तथा भारतीय वैवाहकि व्यवस्था प्रदूषति हुई है। दहेज शादी के समय दुल्हन के ससुराल वालों को लड़की के परविार द्वारा नकद या वस्तु के रूप में कयिा जाने वाला भुगतान है।

आज सरकार न केवल दहेज प्रथा को मटिाने के लयिे बल्कबािलकिाओं की स्थतिकिे उत्थान के लयिे कई कानून (दहेज नषिध अधनियिम 1961) और योजनाओं द्वारा सुधार हेतु प्रयासरत है।

हालाँकइिस समस्या की सामाजकि प्रकृतकिे कारण यह कानून हमारे समाज में वांछति परणािम देने में वफिल रहा है।

इस समस्या से छुटकारा पाने में लोगों की सामाजकि और नैतकि चेतना को प्रभावी बनाना, महलिाओं को शक्षिा तथा आर्थकि स्वतंत्रता प्रदान करना एवं दहेज प्रथा के खलिाफ कानून को प्रभावी ढंग से लागू करना मददगार हो सकता है।

दहेज प्रथा का प्रभाव

- **लैंगकि भेदभाव:** दहेज प्रथा के कारण कई बार यह देखा गया है कमिहलिाओं को एक दायत्वि के रूप में देखा जाता है और उन्हें अक्सर अधीनता हेतु वविश कयिा जाता है तथा उन्हें शक्षिा या अन्य सुवधिाओं के संबंध में दोयम दर्जे की सुवधिाएँ दी जाती हैं।
- **महलिाओं के कॅरयिर को प्रभावति करना:** दहेज प्रथा के लयिे कार्यबल में महलिाओं की खराब उपस्थतिऔिर इसके परणािमस्वरूप वति्तीय स्वतंत्रता की कमी एक बड़ा कारक है।
  - समाज के गरीब तबके प्रायः दहेज में मदद के लयिे अपनी बेटयिों को काम पर भेजते हैं ताकवि‍े कुछ पैसे कमा सकें।
  - मध्यम और उच्च वर्ग के परविार अपनी बेटयिों को नयिमति रूप से स्कूल तो भेजते हैं लेकनि कॅरयिर वकिल्पों पर ज़ोर नहीं देते।
- **कई महलिाएँ अववविाहति रह जाती हैं:** देश में लड़कयिों की एक बेशुमार संख्या शक्षिति और पेशेवर रूप से सक्षम होने के बावजूद अववविाहति रह जाती है क्योंकउिनके माता-पति‍ा ववि‍ाह पूर्व दहेज की मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं हैं।
- **महलिाओं का वस्तुकरण:** समकालीन दहेज दुल्हन के परवि‍ार द्वारा शक्तशिाली संबंध और पैसा बनाने के अवसरों हेतु एक नविेश की तरह है।
  - यह महलिाओं को केवल वाणज्यि के लेख (articles of commerce) के रूप में प्रस्तुत करता है।
- **महलिाओं के वरिुद्ध अपराध:** कुछ मामलों में दहेज प्रथा महलिाओं के खलिाफ अपराध को जन्म देती है, इसमें भावनात्मक शोषण और चोट से लेकर मौत तक शामलि है।

आगे की राह

- **सामाजकि समस्या के राजनीतकि समाधान की सीमाओं को पहचानना:** जनता के पूर्ण सहयोग के बनिा कोई भी कानून लागू नहीं कयिा जा सकता है।
  - नःिसंदेह कसिी कानून का नरि्माण व्यवहार का एक पैटर्न नर्धिारति करता है, सामाजकि ववेक को सक्रयि करता है और अपराधों को समाप्त करने में समाज सुधारकों के प्रयासों को सहायता प्रदान करता है।
  - हालाँकदिहेज जैसी सामाजकि बुराई तब तक मटि नहीं सकती जब तक कलिोग कानून के साथ सहयोग न करें।
- **बालकिाओं को शक्षिति करना:** शक्षिा और स्वतंत्रता एक शक्तशिाली एवं मूल्यवान उपहार है जो माता-पति‍ा अपनी बेटी को दे सकते हैं।
  - यह बदले में उसे आर्थकि रूप से मज़बूत होने और परवि‍ार में योगदान देने वाले एक सदस्य बनने में मदद करेगा, जसिसे परवि‍ार में सम्मान के साथ उसकी स्थतिभिी सुदृढ़ होगी।
  - इसलयिे बेटयिों को अच्छी शक्षिा प्रदान करना और उन्हें अपनी पसंद का कॅरयिर बनाने के लयिे प्रोत्साहति करना सबसे अच्छा दहेज है जो कोई भी माता-पति‍ा अपनी बेटी को दे सकते हैं।
- **दहेज एक सामाजकि कलंक:** दहेज को स्वीकार करना एक सामाजकि कलंक बना दयिा जाना चाहयिे और सभी पीढ़यिों को इसके लयिे प्रेरति कयिा

जाना चाहिये। इसके लिये दहेज प्रथा के दुष्परिणामों के प्रति सामाजिक चेतना जगाने की ज़रूरत है। इस संदर्भ में:
    - केंद्र और राज्य सरकारों को लोक अदालतों, रेडियो प्रसारणों, टेलीविज़न और समाचार पत्रों के माध्यम से 'निरंतर' लोगों के बीच 'दहेज-विरोधी साक्षरता' को बढ़ाने के लिये प्रभावी कदम उठाया जाना चाहिये।
    - दहेज प्रथा के खतरे से प्रभावी ढंग से निपटने के लिये युवा आशा की एकमात्र किरण हैं। उन्हें जागरूक करने और उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिये।
- **बहु हितधारक दृष्टकोण:** दहेज एकमात्र समस्या नहीं है बल्कि इसके लिये कई कारक उत्तरदायी हैं, अतः समाज को लैंगिक समानता के लिये हरसंभव कदम उठाना चाहिये। इस संदर्भ में:
    - लैंगिक असमानता को दूर करने के लिये राज्यों को जन्म, प्रारंभिक बचपन, शिक्षा, पोषण, आजीविका, स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच आदि से संबंधित डेटा देखना चाहिये और उसके अनुसार रणनीति बनानी चाहिये।
    - बाल संरक्षण और सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन का विस्तार करने, काम में भेदभाव को कम करने और कार्यस्थल के अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता है।
    - घर पर पुरुषों को घरेलू काम और देखभाल की ज़िम्मेदारियों को साझा करना चाहिये।

निष्कर्ष

दहेज प्रथा न केवल अवैध है बल्कि अनैतिक भी है। इसलिये दहेज प्रथा की बुराइयों के प्रति समाज की अंतरात्मा को पूरी तरह से जगाने की ज़रूरत है ताकि समाज में दहेज की मांग करने वालों की प्रतिष्ठा कम हो जाए।

दृष्टि मेन्स प्रश्न: दहेज प्रथा न केवल अवैध है बल्कि अनैतिक भी है। अतः दहेज प्रथा के दुष्परिणामों के प्रति सामाजिक चेतना जगाने की आवश्यकता है। टिप्पणी कीजिये।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/dowry-system-in-india